19-3-67

ओम शान्ति

प्रातः क्लास

बच्चे जो प्रदर्शनी का समाचार ~~[illegible]~~ लिखते है वो सभी मुख्य सेन्टरस वाले कैसे सुने उसका भी कोई प्रबन्ध होना चाहिये। जैसे बनारस की तरफ चुनार गांव में प्रदर्शनी की ओपनिंग शंकराचार्य द्वारा कराई गई। उनको कैसे समझाया है वो सभी बच्चों को समझाना सुनाना चाहिये। मुख्य-2 जो महारथी सर्विसेबुल बच्चे है उनको कैसे पता पड़े सो राय निकालनी चाहिये। जो बाप के दिल पर चढ़े हुये सर्विसेबुल बच्चे है उनको समाचार सुनाना चाहिये। तो उनको भी मालूम पड़े कि ऐसे-2 लोग क्या कहते है। कैसे समझाना चाहिये। सर्विसेबुल बच्चों को ही विचार चलेगा कि प्रदर्शनी की ओपनिंग किससे करावें। कैसी-2 पुवाइन्टस सुननी चाहिये। ऐसे-2 मनुष्य (शंकराचार्य) समझ गये तो कहेंगे कि यह नालेज तो बहुत ऊंच है। इनको पढ़ाने वाला कोई तीखा ही दिखाई देता है। भगवान पढ़ाते है यह तो वो मानेंगे भी नही। तो जो अच्छे-2 सेन्टर्स है उनको सुनाना चाहिये। या तो टेप में भरना चाहिये शार्ट में। तो मुख्य सेन्टर्स वाले सुने। जहां अच्छे-2 आते है प्रदर्शनी का उदघाटन करने उनको फिर क्या-2 समझाते है, जैसे गर्गा ने शंकराचार्य को समझाया है गर्गा तो अच्छी ऐक्टर है गुप्ता जी भी अच्छा ऐक्टर है। जैसे मनोहर है चन्द्रमणी है सभी तो दिल पर भी नही चढ़े हुये है ना। रूहानी सर्विसेबुल ही बाप के दिल पर चढ़ते है। यों तो स्थूल सर्विस भी है। परन्तु बाबा का अटेंशन रूहानी सर्विस पर ही जावेगा ना। जो बहुतों का कल्याण करते है। भल कल्याण तो हर एक बात में ही है। ब्रह्मा भोजन बनाने में भी कल्याण है। अगर योगयुक्त हो कर बनावे तो। ऐसे योगयुक्त हो तो फिर तो भण्डारे में भी शान्ती हो। याद की यात्रा पर ही तत्पर रहना है। जो कोई भी आवे तो झट उनको समझावें। यहां तो ऐसे एक भी नही है। जो कि शंकराचार्य को समझा सके। बाबा समझ सकते है कि कौन सर्विसेबुल बच्चे है कि जो समझा सकते है। उनको ही अक्सर करके सर्विस पर बुलाते भी है। तो बाप भी वो ही सर्विस करने वाले बच्चे दिल पर चढ़े रहते है। बाबा का पूरा अटेन्शन सर्विस करने वाले ही बच्चों पर जाता है। यहां तो भले सम्मुख वाणी सुनते है परन्तु कुछ भी समझ नही सकते है। नं ही धारना होती है। क्यो कि देहअभिमान की बिमारी भी बहुत बड़ी है आधा कल्प की। इसको हटाने के लिये बहुत ही थोड़े है जो कि पुरुषार्थ करते है देहीअभिमानी बनने का। बहुतों से मेहनत होती ही नही है। बाप समझाते है देहीअभिमानी बनना है। देहअभिमानी को आसुरी सम्प्रदाय, देहीअभिमानी को ईश्वरिय सम्प्रदाय कहा जाता है। देही-अभिमानी बनने बड़ी मेहनत लगती है। भले कोई-2 चार्ट भी भेजे देते है परन्तु वो भी पूरा नही। फिर भी बाबा समझते है कि कुछ तो अटेन्शन रहता है। देही अभिमानी बनने का अटेन्शन बहुतों का बहुत कम रहता है। देहीअभिमानी बड़े शीतल होंगे। वो इतनी जास्ती बात चीत नही करेंगे उनका बाप से प्यार ऐसा होगा जो कि बात मत पूछो। आत्मा को इतनी खुशी होनी चाहिये जो कि कब कोई मनुष्य को न हो। इन ल-न को भी इतनी खुशी नही रहती है जितनी तुमको अब है। खुशी होती है ज्ञान में। इनको (ल-न) को तो ज्ञान है नही। ज्ञान तुम बच्चों को ही है जिनको कि भगवान पढ़ाते है। भगवान हमको पढ़ाते है यह नशा भी तुम्हारे में ऐवर वेरी को ही है। वो नशा हो तो सदा बाप की ही याद में रहे जिसको ही देहीअभिमानी कहा जाता है। वो नशा रहता नही है। याद में रहने वाले की चलन बड़ी मीठी तथा रायल होती है। हम भगवान के बच्चे है। इसलिये ही गायन भी है कि अतिन्द्रिय सुख गोप-गोपियों से पूछो जो देहीअभिमानी हो बाप को याद करते हो। याद बहुत कम करते है इसलिये ही शिव बाबा के दिल पर नही चढ़ते है। शिव बाबा के दिल पर नही है तो दादा के दिल पर भी नही चढ़ सकते है। उनके दिल पर होंगे तो जरूर उनके दिल पर भी होंगे ही। बाप हर एक को जानते है बच्चे खुद भी समझते है कि हम क्या सर्विस करते है। सर्विस का शौक बच्चों में बहुत होना चाहिये। कोई-2 को सेन्टर चलाने का भी शौक रहता है। कोई को फिर चित्र बनाने का शौक रहता है। बाप

कहते है कि मुझे ज्ञानी तू आत्मा बच्चे प्रिय है। जो कि बाप की याद मे भी रहते है और सर्विस करने लिये भी वो तड़फते रहते है। कोई तो बिलकुल ही सर्विस नही करते है। बाप का कहना भी नही मानते है। — बाप तो जानते है नाँ कि कहा किसको सर्विस करनी चाहिये, परन्तु देहअभिमान मे आने कारण अपनी ही मत पर चलते रहते है। तो उनको कपूत कहते है। संग दोष मे रुकाव हो जाते है। यहा भी जो सर्विस करते है वो ही बाप को प्यारे लगते है। जो सर्विस ही नही करते है तो उनको प्यार थोड़ेई करेंगे। बाप समझता है कि तकदीर अनुसार ही पढ़ेगे। परन्तु फिर भी प्यार किस पर रहे वो भी तो कायदा है नाँ। अच्छे बच्चो को बहुत प्यार से बुलावेंगे। तुम बहुत सुखदाई हो। तुम पितृ स्नेही हो। जो बाप को याद ही नही करते है उनको पितृस्नेही थोड़ेई कहेंगे। दादा स्नेही नही बनना है। स्नेही बनना है बाप का। उनका बोल-चाल बहुत मीठा रहेगा। विवेक यह कहते है। समय तो अभी है परन्तु शरीर पर भरोसा थोड़ेई है। बैठे-2 ही एक्सीडेन्ट हो जाता है। कोई का हार्टफेल हो जाता है। किसको कोई रोग ही लग जाता है। मौत तो अचानक ही हो जाता है नाँ। इसलिये ही श्वास पर तो कोई भरोसा ही नही है। नेचरल कैलेमिटीज की भी अब प्रैक्टिस हो रही है। बिना समय बर्षा पढ़ने पर भी बहुत नुकसान कर देती है। यह दुनियाँ ही दुःख देने वाली है। बाप भी ऐसे ही समय आते है जब कि महादुःख हो। खून की नदी भी बहनी ही है। कोशिश करनी चाहिये कि हम अपना पुरुषार्थ कर 21जन्मों के लिये अपना कल्याण तो कर लेवें। बहुतों मे अपना ही कल्याण करने का पुरुषार्थ दिखाई नही पड़ता है। बाबा यहाँ बैठे मुरली चलाते रहते है तो भी बुधी सर्विसिबुल बच्चों तरफ ही चली जाती है। अब शंकराचार्य को मंगाया था प्रदर्शनी मे, नही तो यह लोग कहीं भी ऐसे जाते नही है। बहुत घमण्ड से रहते है। तो उनको मान भी देना पड़ता है। ऊपर सिंहासन पर बिठाना पड़े। ऐसे नही कि साथ मे सरीखा ही बैठ सके। नही रिगार्ड उनको बहुत चाहिये। निर्माणचित हो तो फिर यह चांदी आद का सिंघासन भी छोड़ देवे। बाप कितना साधारण रहते है। कोई भी जानते नही है। तुम बच्चों मे भी कोई विरले ही जानते है। कितना निरअहंकारी बाप है। यहाँ तो बाप और बच्चों का सम्बन्ध है। जैसे लौकिक बाप बच्चों साथ रहते खाते खिलाते है। यह है बेहद का बाप। सन्यासी आद को बेहद के बाप का प्यार नही मिलता है। तुम बच्चे जानते हो कि कल्प-2 हमको बेहद के बाप का प्यार मिलता है। बाप गुलगुल बनाने लिये बहुत मेहनत करते है। परन्तु ड्रामा प्लान अनुसार सभी तो गुलगुल भी नही बनते है नाँ। आज बहुत अच्छे-2 कल फिर बहुत गन्दे विकारी हो जाते है। बाप तो कहेंगे तकदीर मे नही है। और फिर क्या करेंगे। आवाज़ तो नही करेंगे नाँ। नही तो इज्जत जाती है। गुप्त रखना पड़ता है। बहुतों की चलन ही गन्दी हो जाती है। आज्ञा का उल्लंघन करते है। ईश्वर की मत भी नही लेंगे तो उनका क्या हाल होगा। ऊँच ते ऊँच बाप है। और तो कोई नही। फिर देवताओं के चित्रों मे देखेंगे तो यह ल-न ही मुख्य है। परन्तु मनुष्य यह भी नही जानते है कि इनको यह राज किससे मिला। आपतुमको अच्छीरीती रचता और रचना की नॉलेज सु समझाते है। बाकी तो जो सर्विस के बदले डिस ही सर्विस करते है उनकी याद कब भी बाप की अन्दर नही आती है। उनको तो देखते हुये भी जैसे कि देखते ही नही है। जैसे इस दुनियाँ को देखते हुये भी हम देखते नही है हमको तो अन्दर मे शान्तिधाम और सुखधाम ही याद आता है। जो सर्विस नही करते है उनका तो नाम सुनने की दिल नही होती है। सर्विस करने वालो का नाम ही अन्दर मे आता है। जरूर है जो कि बाप का आज्ञाकारी बच्चा होगा उस तरफ ही बाप की दिल जावेगी। बाकीयों के लिये तो जैसे कि नफरत आवेगी क्योंकि वो तो नाम बदनाम करते है। बेहद का बाप एक ही बार आता है। वो लौकिक बाप तो जन्म जन्मान्तर मिलते है। सतयुग मे भी मिलते है। परन्तु वहाँ वो बाप मिलता ही है अभी की पढ़ाई से। यह भी तुम बच्चे जानते हो कि हम बेहद की पढ़ाई से विश्व के

नई दुनियां के मालिक बन रहे हैं। यह बुधी में सदा ही याद रहना चाहिये। है बहुत सहज। बाबा कहते थे हम खेलें और कोई आ जावे तो हम वहां ही खड़ा होकर नालेज देने लग जाऊं गाकि बेहद के बाप को जानते हो। बाप आये है पुरानी दुनियां को नया बनाने लिये। राजसिखाते है। भारत वासियों को ही सिखलाना है। और भारत ही स्वर्ग था तो इन देवताओं का राज्य था। अभी तो नर्क है। नर्क से फिर स्वर्ग बाप ही बनाते है नां। ऐसे-2 मुख्य बाते याद करो तो कोई भी आवे तो उनको बैठ समझाओ तो कितनी खुशी हो। परन्तु किसको भी रहता बताने का शौक नही है। सिर्फ बोलो तो कि बाप आया हुआ है। यह वो ही महाभारत लड़ाई है। जो कि गीता में ही गाई हुई है। गीता का भगवान आया था। गीता सुनाई किस लिये? मनुष्यों को देवता बनाने। बाप सिर्फ कहते है कि मुझ बाप को और वर्से को याद करो। यह तो दुःखधाम है। इतना ही बुधी में याद रहे तो भी खुशी रहे। हम आत्मा बाबा के साथ जाने वाली है शान्ति धाम में। फिर वहां से पार्ट बजाने आवेंगे। पहले-2 सुखधाम में। जैसे कालिज में पढ़ते है तो सोचते है कि हम परिक्षा पास करते है और फिर क्या बनेंगे। बैरिस्टर बनेंगे वा पुलिस सुपरीडेन्ट बनेंगे। इतना पैसा कमावेंगे। खुशी का पारा चढ़ा रहता है। तुम बच्चों को भी यह खुशी है कि हम बेहद के बाप से यह वर्सा पाते है? फिर हम स्वर्ग में महल बनावेंगे। सारा दिन यही बुधी में चिनतन रहे तो खुशी भी हो। अपना और दूसरों का भी कल्याण करें। धन है और दान नही करते है तो वो किस काम का। बाप भी तो अविनाशी ज्ञान रत्नों का दान करते है नां। धन और फिर नही करते है तो वो मनहूस ठहरे नां। गोया कि उसके पास धन ही नही है। है वे तो दान भी जरूर करें। अच्छे-2 महारथी जो है वो ही दिल पर चढ़े रहते है। कोई तो भल अच्छे-2 है, उनमें भी बाप खयाल रहता है कि उनकी सरकमस्टांसिज ऐसे है जो कि शायद टूट भी जावे। देह का अहंकार बहुत चढ़ा हुआ है। कोई भी समय छोड़ देवे और जाकर अपने ही घर रहे तो भी नेम नही है। भले मुरली अच्छी चलाती है वा चलाता है, परन्तु देहअभिमान बहुत है। कोई भीसमय बाबा थोड़ा भी कहे तो झट टूट पड़ेंगे। नही तो गायन है कि चाहे मारो... मगर यहां तो बाबा राइट बात भी कहते है तो भी झट गुस्सा आ जाता है। अच्छे-2 ऐसे भी है। परन्तु कहीं बेड़ा गर्क ही नां हो जावे इसीलिये है, छोड़ देते है। कोई तो बहुत-2 शुक्रीया मानते है। कोई तो अन्दर ही जल भी मरते है। देहअभिमान माया का बहुत है। तो यहां ऐसे शंकराचार्य आद जैसेकितने ढेर प्रदर्शनी में आते है। सर्विस अच्छी होती है तो वो समाचार सब सेन्टर्स को लिख भेजना चाहिये। तो सभी को मालूम पड़े कि कैसे सर्विस होती है तो वो भी सीखें। ऐसे-2 शंकराचार्य आद जैसे को पकड़ने की कोशिश करेंगे। ऐसी सर्विस की खयालात जिनको आती है उनको बाबा सर्विसकुल समझेंगे। सर्विस में कब रूकना नही चाहिये। यहां तो बहुतों का कल्याण करने का है। बाबा को तो ओना रहता है कि सबको यह नालेज मिले। और बच्चों की भी उन्नित हो। रोज वाणी में समझाते रहते है। कई तो ऐसे भी बच्चे है जो कि मुरली सुनते भी नही है। और कोई तो मुरली बिना रह ही नही सकते है। अच्छे-2 बच्चे भी कब मुरली नही पढ़ते है। अपने ही हठ है कि हमारे में तो ज्ञान ही बहुत है। और है कुछ भी नही। यह रूहानी सर्विस है मुख्य। सुनाना है और सुनना है। शौक होना चाहिये। बैज लेकर रोज ल-न के मन्दिर में जाकर समझायें कि इनको यह राजाई मिली ही कैसे। फिर कहां गये। कोई भी आवे तो बोलो यह (ल-न) कौन है। कब भारत में इनका राज्य था? कहते है हनूमान जूतों में जाकर बैठता था। इसको भी तो रहस्य है नां। तरस पड़ता है, पढ़ना चाहिये कि भक्ति मार्ग वाले सन्यासी तो सबको कुएं में डाल रहे है। हम उनको निकालें। सर्विस की युक्तियां बाबा बहुत बताते है। परन्तु कोई मुश्किल ही अमल में लाते है। सर्विस बहुत है अन्धों की लाठी बनना है। जो सर्विस नहीकरते है उनको बाबा अन्धा कहते है। उनको काना चूना समझते है। बुधी साफ नही है तो धारना भी नही होती है। ओम (फिर भी देखना) ओम